ISSN 2249-1635

A National, Registered, Recognized Referred Hindi Quarterly

लोकयज्ञ

संपादक
डॉ.सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत'

वर्ष (13) 8 अंक 29-30 जनवरी से जून 2015 (संयुक्तांक) मूल्य 25 रूपये आर.एन.आई.नं.MAHHIN/2002/12063 पृष्ठ 32

हिन्दी साहित्य गंगा संस्था, जलगांव का गंगा महोत्सव सम्पन्न

रिसर्च लिंक और लोकयज्ञ के संयुक्त तत्वावधान में डॉ.प्रियंका सोनी 'प्रीत', डॉ.अमित शुक्ल, डॉ.उत्तम साळवे, श्री सुभाषचन्द को सुवर्ण पदक प्रदान

जलगाँव (संवाददाता)-अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी प्रचार में अग्रेसर संस्था हिन्दी साहित्य गंगा जलगाँव का साहित्य संमेलन 11, 12 अप्रैल को होटल ब्रेजी होम एण्ड रिसोर्ट में बडे ही गरिमामय रूप में सम्पन्न हुआ । दो दिवसीय इस सम्मेलन में पुरे देश से लगभग 150 साहित्यकारों ने भाग लिया ।

दो दिवसीय इस सम्मेलन का भव्य उद्घाटन जलगाँव के विधायक श्री.सुरेश प्रभु, उद्योगपती देवीचन्द्र छोरिया, वरिष्ठ साहित्यकार सुरजीतसिंह जोबन, डॉ.पुनम शर्मा, जे.के.डागर, श्री.मोहम्मद हुसैन खान, डॉ.अमानुल्ला शाह, मा.युसूफ मकरा, श्री.जितेन्द्र जैन, सुशील पगारिया, दलुभाऊ जैन आदि के उपस्थिति में संपन्न हुआ । प्रस्तावना संस्थान की अध्यक्षा डॉ.प्रियंका सोनी ने रखी । तत्पश्चांत डॉ.प्रियंका संपादीत ''शब्द-मोहिनी'', श्री.सागर त्रिपाठी लिखित ''अलिफ'', डॉ.पी.बी.फिलीप नागालॅण्ड द्वारा लिखित ''नागालॅण्ड की लोककथाएँ, आदि पुस्तकों का मान्यवरों के हाथों प्रकाशन किया गया ।''

प्रथम दिन का द्वितीय सत्र राष्ट्रीय संगोष्ठी का था । जिसके विषय 'हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य, समय समाज और साहित्य, साहित्य में स्त्रियों का स्थान, भारतीय संस्कृति के विकास में स्त्रियों का योगदान । इस सत्र के अध्यक्ष ठाकुर रणमत सिंह कॉलेज के डॉ.अमित शुक्ल थे । इस सत्र में डॉ.रीता गौतम (मुंबई), डॉ.राम आसरे गोयल, डॉ.कृष्णा खेत्री (मुंबई), डॉ.सलमा जमाल (जबलपुर)', भावना सावलिया (घोराजी गुराजत), आशा पाण्डें ओझा (गुजरात) आदि अने आपने शोध पत्र प्रस्तुत किये । इस संगोष्ठी की प्रस्तावना और सुत्र संचालन डॉ.सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत' बीड ने किया । तृतीय सत्र में ब्रदर्स सामाजिक संस्थान असम के दिव्य ज्योति सैकिया ने मानव अधिकारों पर भाषण दिया । जिसका आभार श्री.प्रकाश कोठारी ने माना। चतुर्थ सत्र रंगारंग कार्यक्रम का रहा । पाँचवे सत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । जिसमें देशभर से आये हुए कवियों ने काव्य पाठ किया । इस कवि संमेलन का संचालन डॉ.प्रियंका सोनी ने किया ।

12 अप्रैल की सुबह 11 बजे सम्मान समारोह संपन्न हुआ । इस सम्मान समारोह के प्रमुख अतिथी थे उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव के कुलपति डॉ.सुधीर मेश्राम, अतिथि थे डॉ.सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत', श्री.सुरजीत सिंह जोबन, डॉ.ललिता जोगड, दलुभाऊ जैन, डॉ.पुनम शर्मा आदि के हाथों सभी साहित्यकारों को गंगा ज्ञानेश्वरी गौरव पुरस्कार, शाल, स्मृतिचिन्ह, सम्मानपत्र और स्मरिका मंदाकिनी देकर पुरस्कृत किया गया ।

इसी सम्मान समारोह में डॉ.प्रियंका सोनी ''प्रीत'' को सालभर हिन्दी की सेवा करने हेतु, शोध के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए डॉ.उत्तम सालवे (बीड), डॉ.अमित शुक्ल (रीवा) और श्री सुभाषचन्द को अन्तरराष्ट्रीय शोध जर्नल रिसर्च लिंक इन्दौर और राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त शोध साहित्य की पत्रिका लोकयज्ञ के संयुक्त तत्वावधान में समारोह के प्रमुख अतिथि कुलपति डॉ.सुधीर मेश्राम के हाथों सुवर्ण पदक और सम्मान पत्र प्रदान किया गया । साथ ही में डॉ.सोपान सुरवसे, प्रो.ज्योतिश्वर भालेराव को कुलपति के हाथों रिसर्च लिंक के बेस्ट पेपर ऑफ द ईयर अवार्ड प्रदान किये गये । इस सत्र में भी कई पुस्तकों का लोकार्पण सभी मान्यवरों के करकमलों द्वारा किया गया। इस सत्र का संचालन रितैष सोनी, हितेश ने किया तो आभार डॉ.प्रियंका सोनी 'प्रीत' ने माना । भोजन पश्चात बहुभाषिक कवि संमेलन के आयोजन के बाद समारोह का समापन हुआ ।

ISSN 2249-1635
जनवरी से जून 2015 (संयुक्तांक) A National, Registered, Recognized Referred Hindi Quarterly लोकयज्ञ

रिसर्च पेपर

दसवें दशक के लघु उपन्यासों का राजनीतिक अध्ययन

- प्रो.डॉ.पठाण ए.एम.

किसी भी युग का साहित्य युग की राजनीतिक पृष्ठभूमि से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता । बीसवीं सदी के आखिरी दशक को दो प्रमुख घटनाओं ने प्रभावित किया है, वे है भूमंडलीकरण का आरंभ और बाबरी कांड होने के बाद भारत में फैली हुई जातीय राजनीति । दसवें दशक में कोई भी पार्टी या पक्ष राष्ट्रीय स्तर पर बहुमत प्राप्त नहीं कर पा रही थी । इस कारण देश के राजनीतिक परिवेश में संपूर्ण अस्थिरता निर्माण हो गई थी । क्षेत्रीय दल इतने प्रभावी हुए थे कि केंद्र में किस पार्टी की सरकार आए यह भी क्षेत्रीय पार्टिया ही निर्धारित करती थी । दसवें दशक के अंत में जो ताज प्रधानमंत्री के रूप में वाजपेयीजी के सर पे रखा गया था वह सर्वत: काँटो से भरा हुआ था । इस दशक में महिलाओं की अधिक भागीदारी भी राजनीति में दर्ज हुई है ।

दसवें दशक के लघु उपन्यासो ने तत्कालीन राजनीतिक अस्थिरता, क्षेत्रीय दलों का अधिक प्रभाव, सांप्रदायिकता, भूमंडलीकरण, सत्ता का भ्रष्ट और क्रुर रूप आदि बातों को उजागर किया है । इस के माध्यम से उपन्यासकार लोकतांत्रिक मूल्यों के हनन की विडंबना को सामने लाते है और जनतांत्रिक व्यवस्था के मौजूदा स्वरूप में बदलाव की आवश्यकता जताते है । मिथिलेश्वर ने 'यह अंत नहीं' में बिहार के जाति संघर्ष और राजनीति को बखूबी चित्रित किया है । इस उपन्यास का नायक चुनिया जोखन को अपहरण कर्ताओं के चगल से छुड़ाकर एक क्रांतिकार की छबि बनाता है और राजनीति के विरोध में संघर्ष करता है । ज्योतिष जोशी के 'सोनबरसा' इस उपन्यास में बिहार के पिछड अंचल की त्रासदी को वास्तव रूप में दिखाया है । परिमल बाबू बालेश्वर चौधरी से कहते है कि, ''चौधरी साहब, अन्याय और बेहिसाब लूट अब बंद कीजिए, शर्म आनी चाहिए आपको कि आप मंत्री है, जनता के नुमाईंदा है, आपको गलत काम करना शोभा नहीं देता ।''[1] पहले राजनीति शक्ति पाने और समाज का लाभ करने हेतु की जाती थी । परंतु इस समय दिल्ली से गलियों तक और हर सार्वजनिक संस्थाओं में राजनीति सिर्फ स्वार्थ के लिए की जाती है । शिक्षा देनेवाली पवित्र संस्थाएँ भी इस से अछुती नहीं है । दसवें दशक की राजनीतिक अस्थिरता, सांप्रदायिकता, भूमंडलीकरण, भ्रष्ट सत्ता तथा जातीय राजनीति को लेकर कई उपन्यास लिखे गए । जिनमें गिरिराज किशोर का 'यातना घर', उषा यादव का 'नीलकंठ', शिव मूर्ति का 'तर्पन', उदय प्रकाश का 'मोहनदास', विभूति नारायन राय का 'किस्सा लोकतंत्र', 'शहर में कर्फ्यू', मैत्रेयी पुष्पा का 'इदन्नमम', गीतांजली श्री का 'हमारा शहर उस बरस' आदि उपन्यास महत्वपूर्ण है ।

गिरीराज किशोर ने 'यातना घर' में शैक्षणिक संस्थानों को आधार बनाकर व्यवस्था के अंर्तविरोध राजनीति का परिचय दिया है । उषा यादव ने 'नीलकंठ' में विश्वविद्यालय स्तर की राजनीतिक अराजकता का विश्वसनीय बखान किया है ।

शिवमूर्ति का 'तर्पन' यह उपन्यास गाँव में दलितों का राजनीतिक महत्व और राजनीतिक स्तर पर दलितों की जागरूकता उजागर करता है । 'तर्पन' इस उपन्यास में शिवमूर्ति ने भारतीय समाज में शोषित, दलित और उत्पीड़ित समुदाय के प्रतिरोध एवं परिवर्तन की कथा है । राजपती, भाईजी, मालकिन, धरमू पंडित जैसे अनेक चरित्रों के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था का अमोघ संधान किया है । उथल-पुथल से भरा यह उपन्यास भारतीय समाज और राजनीति मे दलितों को नई करवट का सचेत, समर्थ और सफल आख्यान है ।

उदय प्रकाश का लघु उपन्यास 'मोहनदास' में समाज में राजनीतिक जहर किस तरह फैला है और गांधीवादी विचारधारा रखनेवाले किस तरह इसका शिकार बने है इसका सटीक चित्रण किया है । दरअसल 'मोहनदास' उस तंत्र का एक रूपक है, जहाँ जोर जबरदस्ती, तिकड़म, संबंध के जरिए योग्य की जगह अयोग्य लोग काबिल होते हैं, जहाँ लोकतंत्र के ठेकेदार सबसे ज्यादा अलोकतांत्रिक होते हैं, जहाँ जनता का विकास करनेवाले सिर्फ अपनी समृद्धि के लिए जनता के विनाश की कारवाईयां संचलित करते हैं, जहाँ जनता के प्रति उनका प्रेम, दया और सहानुभूती सिर्फ पाखंड होता है और जहां शोषण, गुलामी, अन्याय, उत्पड़िन की तमाम प्रवृत्तियाँ का शासक वर्ग संरक्षण और संवर्धन करता है । गिरीराज किशोर के 'यातना घर' में शिक्षा देनेवाली पवित्र संस्थाओं में अति भ्रष्ट राजनीति का सच्चा रूप बताया है । यथा-'यह लोग काम करते हैं...' आदमी कमजोरी तलाशते है - जो जिसकी कमजोरी होती है वही ले जाकर उसे जीवद्ध कर देते हैं ।[2]

विभूतिनारायण राय का 'किस्सा लोकतंत्र' का यह लघु उपन्यास सही अर्थ में पूर्णत: राजनीतिक उपन्यास हैं । पी.पी.नामक एक शातीर और गुंडे नेता की कहानी इसमें रेखांकित की गई हैं । शांतिप्रसाद यह एक अत्यंत बुद्धिमान राजनीतिक सलाहकार हैं । जो राजनीति को बखूबी जानता हैं । समय संधी को सही तरह से इस्तेमाल कर उससे फायदा उठाने की राजनीति में वह माहीर हैं । प्रेस काँफ्रेस शुरू होने से पहले ही उसने बता दिया था कि यहाँ उन्हें विनम्र किस्म की राजनीतिक भाषा का प्रयोग करना पड़ेगा । परेशानी का कारण यही था कि यह भाषा बार-बार उनके धैर्य की परीक्षा ले रही थी । जब उन्हें पत्रकार सवाल पुछता है - ''एक बात तो बताइए यादवजी आप तो अच्छे भले धंधे में थे फिर अचानक चुनाव लड़ने की कैसे सुझी ?'' यादवजी कहना चाहतेथे कि धंधे के ही चक्कर में चुनाव लड़ने का इरादा किया हैं लेकिन अपने को जप्त करते हुए उन्होंने बड़ी शालीनता से उत्तर दिया ।

क्योंकि बिजनेसवालों को देशसेवा नहीं करनी चाहिए क्या ? यादवजी की विनम्रता के पीछे छिपे राजनीति को भाँपते हुए एक पत्रकार ने उनकी विनम्रता का नाजायज फायदा उठाकर चुटकी लेने की बेहुदा हरकत करते हुए यादवजी से कहा - ''मान्यवर पुलिसवाले कहते की आप माफिया हैं । शराब की तस्करी करते हैं । आपके खिलाफ लुट और कत्तल के मुकदम हैं । लोग कह रहे कि आप चुनाव इसलिए लढ़ रहे हैं कि पुलिस आपको परेशान ना करे ।'' पत्रकार के इस सवाल ने यादवजी की बनावटी शराफत को तोड़ दिया और उन्होंने गुस्से में आकर कहा - ''कौन मादर कहता हैं । यादवजी की भाषा सुनकर उनके सलाहकारने पीछेसे उनकी पीठ में उंगली की और यादवजी ने अपने उपर नियंत्रण करते हुए कहा - गुप्ताजी, पुलिसवालों की बात पर क्यों जाते हैं । आप खुद बताइए, क्या मैं बदमाश हूँ ? यहाँ पर बैठे सभी पत्रकार भाईयों को मेरी खुली चुनौती हैं, बताईए आप में से किसी को मैं अपराधी लगता हूँ- बताईए बताईए ।''[3] यादवजी ने विजेता मुस्कान से सबकी ओर देखा 'किस्सा लोकतंत्र' का इस पूरे उपन्यास में एक वास्तविक और घटिया राजनीति का चित्रण विभूतिनारायण राय ने किया है ।

मैत्रेयी पुष्पा का 'इदन्नमम' यह उपन्यास बुंदेलखंड जीवन के प्रामाणिक और अंतरंग अनुभव, पहाड़ी अंचल की धरती और बीहड के जीवन के सामाजिक एवं राजनैतिक यथार्थ तथा गहरी संवेदना से संपन्न है । अरविंद जैन के अनुसार ''यह अपनी उपरी सादगी और सरलता के बावजूद एक बेहद जटिल और सांश्लेष्ट उपन्यास हैं ।''[4] इदन्नमम की कथा तीन पीढ़ियो की स्त्रियों की कथा हैं । इस उपन्यास के माध्यम से लेखिकाने हर स्त्री पात्र को सशक्त गढ़ा है, चाहे वह बऊ हो या प्रेम, मंदाकिनी हो या फुसुमा भाभी या फिर सुगना हर कोई अपने हिस्से की लढ़ाई लड़ती हुई आगे बढ़ती हैं ।

इस उपन्यास में समसामायिक घटनाओं का उल्लेख हुआ हैं, क्रैशर के कारण गाँव के प्राकृतिक सौंदर्य का विनाश, पर्यावरण प्रदुषण से उत्पन्न रोग, आतंक, हिंसा, दादागिरी, स्वार्थ, अयोध्या, बाबरी मास्जिद काण्ड, भ्रष्ट राजनीति आदि का चित्रण किया हैं । आजादी के बाद भारतीय जनमानस भीतरी बाहरी रूपमें परिवर्तित हुआ । राजनीति की दिशाहीनता ने चारो ओर अव्यवस्था और भ्रष्टाचार फैला दिया ।

समकालीन कथा साहित्य में शिवमूर्ति ग्रामीण वास्ताविकता और राजनीति के सर्वाधिक समर्थ और विश्वनीय लेखकों में हैं । 'तर्पण' उनकी क्षमताओं का शिखर हैं । राजपत्ती, भाईजी, मालकिन, धरमू पंडित जैसे अनेक चरित्रो के साथ अवध का एक गाँव अपनी पूरी सामाजिक, भौगोलिक, राजनीति संरचना के साथ उपस्थित हैं ।'' संक्षेप में ''तर्पण'' यह एक ऐसा उपन्यास हैं जिसमें मनु की सामाजिक व्यवस्था का अमोध संधान किया गया हैं । तर्पण इस उपन्यास में शिवमूर्ति ने भारतीय राजनीति में दलितों की नई करवट तथा राजनीति के बारे में दलितों की जागरूकता का चित्रण किया हैं ।

गीतांजलि श्री का ''हमारा शहर उस बरस'' यह उपन्यास आसान दिखनेखाली मुश्किल कृती हैं । इस उपन्यास में उलझन पैदा करने वाले सच्चाईयों को प्रकट किया हैं । बात उस बरस की हैं, जब हमारा शहर आये दिन सांप्रदायिक दंगो से ग्रस्त हो जाता था । इस उपन्यास में बाबरी मस्जिद काण्ड के बाद देश में जो सांप्रदायिकता फैली थी उसका सटिक और वास्तविक चित्रण किया हैं । राजनैतिक स्वार्थ के लिए देश में किस प्रकार सांप्रदायिकतावाद फैलाया गया था । इसका वर्णन गीतांजलि श्री ने प्रस्तुत उपन्यास में किया हैं ।

इस प्रकार सांप्रदायिकतावाद तथा अन्य कारणों से उत्पन्न खोखली राजनीति को उपन्यासकार ने अपनी रचनाओं में स्वीकार किया हैं । गहराई से विचार करने पर राजनीति का संबंध सांप्रदायिकता से दिखाई पड़ता हैं । साहित्य में राजनीति का मतलब उस मूल्य दृष्टि से हैं जो काल प्रवाह के साथ नवीन चेतना से सम्पन्न रहती हैं । वस्तुत: राजनीति एक विशेष जीवन दृष्टि हैं जो प्राय: समसामयिक सभ्यता और तत्कालीन सामाजिक परिस्थिती को व्यक्त करती हैं ।

*** संदर्भ ग्रंथ सुची :**

1) ज्योतिष जोशी-सोनबरसा - पृ.136
2) गिरीराज किशोर-यातना घर- पृ.56
3) विभूतिनारायण राय-किस्सा लेकांत - पृ.23
4) मालती अडवानी-दसवे दशक के उपन्यास पृ.47

- प्रो.डॉ.पठाण ए.एम.
मिल्लिया कला, विज्ञान व व्यवस्थापन शास्त्र महाविद्यालय,
बीड, जि.बीड-431122. (महाराष्ट्र)

अष्टम राष्ट्रीय कबीर समारोह का आयोजन

रीवा - प्राणलोक संस्था के अध्यक्ष दर्शन राही ने घोषणा की है कि, अष्टम राष्ट्रीय कबीर समारोह सद्गुरू कबीर की 618 वी जयंती 2 जून 2015 को मानस भवन, रीवा में बडे ही धुम-धाम से मनायी जायेगा । इस समारोह में 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' विषयपर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है । इस संगोष्ठी के अध्यक्ष कवि, विचारक, प्रसिद्ध विधिज्ञ श्री घनश्याम सिंह रीवा रहेंगे तो प्रमुख अतिथि के रूप में प्रसिद्ध संपादक साहित्यकार डॉ.सोनवणे राजेंद्र 'अक्षत' उपस्थित रहेंगे । इस संगोष्ठी में प्रो.अब्बास फरहत, डॉ.अरूणा अग्रवाल, डॉ.सुनीता युदुवंशी, देवीसिंह शर्मा, डॉ.चंद्रिका प्रसाद, इंजि.शेख बहादुर सिंह परिहार, ऋषि पांडे आदि विद्वतजन अपना शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे । रात्री में श्री पागलदास एवं सहयोगी कबीर संगीत को प्रस्तुत करेंगे । इसके बाद भव्य राष्ट्रीय कवि संमेलन का आयोजन किया जायेगा । जिसमें बघेली के कवि डॉ.अमोल बटरोही, शीर्ष हिंदी गीतकार डॉ.सुमेर सिंह, निर्बंध शैली के कवि सुभाषचंद्र विश्वासी के साथ नगर के कवि काव्यपाठ करेंगे । विन्ध्याटवी के इस सांस्कृतिक कबीर अनुष्ठान में सम्मिलित होकर समारोह को सफल बनाने का आवाहन संपूर्ण प्राणलोक परिवार रीवा करता है ।